RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

महाकाव्य और पुराणों में कृत्रिम बुद्धि (AI) की महता

Subhash Chander, Assistant Professor, Department of History, Ryan College for Higher Education, Hanumangarh

Abstract

रामायण और महाभारत कल में ही कृत्रिम बुद्धि का उपयोग किया जाता था। कृत्रिम बुद्धि का उपयोग सत्पुरुष के लिए अच्छे कार्यों के लिए और राक्षस प्रवृत्ति के लोगों के द्वारा बुरे कार्यों में किया जाता था। पुराणों में भी कृत्रिम वृद्धि के अनेक उदाहरण मिलते हैं। अनेक पौराणिक कथाओं में भी कृत्रिम बुद्धि के उपयोग पर चर्चा की गई है। महाकाव्य कल और पुराणों में कृत्रिम विधि का उपयोग एक विशेष लोगों के द्वारा ही किया जाता था। ऋषि मुनियों के पास दिव्य शक्ति उनकी कृत्रिम बुध्दिता को दर्शाती थी। कालखंड के अनुसार कृत्रिम बुद्धि की उपयोगिता और दुष्प्रभाव बढ़ते गए।

परिचय – कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) एक शाखा है जो कंप्यूटर विज्ञान से संबंधित है और इसका उद्देश्य मशीनों को इंसान जैसा सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना है। इसका मतलब है कि कंप्यूटर और मशीनें बिना इंसान की मदद के, स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकती हैं। यह विभिन्न तकनीकों, जैसे मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का उपयोग करके काम करती है। इस तरह की तकनीक का उपयोग रामायण, महाभारत व पुराणों में हुआ है।

रामायण में कृत्रिम बुद्धि

(क) यंत्र मानव – त्रिजटा

लंका में रावण की सेविका त्रिजटा का उल्लेख किया गया है, जिसे कुछ विद्वान एक यांत्रिक यंत्र या रोबोट का रूप मानते हैं। वह सीता माता की सुरक्षा में तैनात थी और भविष्यवाणी करने की क्षमता रखती थी। यह आज के AI–नियंत्रित सुरक्षा प्रणालियों या रोबोट गार्ड्स के समान हो सकता है।

रामायण के अनेक प्रसंगों में इस तरह का वर्णन मिलता है। सर्वप्रथम रामायण में प्रयुक्त होने वाले अस्त्र शास्त्रों के बारे जानते हैं, जो निम्न प्रकार से हैं

रामायण में कुल अस्त्रों की संख्या 1000 बताई गई है।

ब्रह्मास्त्र – ब्रह्मा जी ने विश्वामित्र को दिया था। यह अस्तर अपने स्वामी के स्वरों पर चलता था यह एक तरह से सुपरसोनिक मिसाइल की तरह था। इंद्रजीत के द्वारा ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर लक्ष्मण को मूर्छित किया गया था। यह एक बार में पूरी सेना को ध्वस्त कर सकता था। ब्रह्मास्त्र या दिव्यास्त्र के द्वारा राम ने रावण का वध किया था।

मोहिनी अस्त्र – इस अस्त्र का उपयोग इंद्रजीत ने राम व लक्ष्मण पर किया था। इस अस्त्र से इंद्रजीत ने राम लक्ष्मण को मोहित कर बांध लिया। यह एक तरह से मायावी अस्त्र था जो भ्रमित करता था।

लव कुश के द्वारा इसका उपयोग भरत व शत्रुघ्न पर किया गया था।

इस अस्त्र का प्रयोग जिस पर किया जाता था वह कई दिन तक उसके वश में रहता था।

आग्नेय अस्त्र – राम ने समुद्र को सुखाने में प्रयोग किया था।

ब्रह्माशीर अस्त्र – यह ब्रह्मास्त्र से भी चार गुना अधिक शक्तिशाली था, लेकिन इसका उपयोग कोई नहीं कर पाया था। यह एक तरह से सुपरसोनिक से भी सुपर सोनिक मिसाइल थी, जो पूरे ब्रह्मांड को तबाह कर सकती थी।

अक्षय तूनीर – यह अस्त्र अगस्त्य ऋषि ने राम को दिए थे इसके तीर कभी भी अचूक नहीं थे लक्ष्य को भेदने के बाद ही वापस आते थे। यह अस्त्र मन की गति से चला था। इसका उपयोग राम ने तड़कावध, सुबाहुवध आदि में किया था।

(ख) पुष्पक विमान

रामायण में पुष्पक विमान का वर्णन किया गया है। यह एक उड़ने वाले एक रथ की तरह है। तकनीकी रूप से समय की गति से परे है। AI ने इस तरह के प्राचीन विवरणों पर कार्य करने का प्रयास कर रही है। इसका उद्देश्य प्राचीन कहानियां एवं समकालीन तकनीक के बीच एक सेतु का काम करना है।

यह अपनी चमक में सूर्य के समान है इसकी गति मन की गति से तेज है। यह रावण के बड़े भाई कुबेर के पास था, रावण ने उसे छीन लिया था। लंका विजय के बाद राम इसी विमान से अयोध्या गए थे।

इस विमान में अपने आकार को बढ़ाने की क्षमता है अर्थात अधिक लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

पर ले जा सकता है। इसमें सभी प्रकार के अस्त्र–शस्त्र होते थे, जिनका उपयोग परिस्थिति के अनुकूल इसका स्वामी कर सकता था।

पुष्पक विमान के शिल्पकार विश्वामित्र थे जिसे सोने, हीरे जवाहरात इत्यादि से बनाया गया था।

पुष्पक विमान प्राचीन भारत की समृद्धि विकास का सूचक है। यह मानवीय भाषाओं को समझता था इसे मत्रों के द्वारा नियंत्रित किया जा सकता था। स्वचालित यंत्र को मंत्रों व शब्दों से संचालित होते थे। रावण ने सीताहरण के समय इसी विमान का उपयोग किया था। संवेदक उपकरण लगे थे, आक्रमणकारी के बारे में पूर्व सूचना देते थे। यह कृत्रिम बुद्धि का सबसे प्रामाणिक उदाहरण है। पुष्पक विमान में मशीन लर्निंग एल्गोरिया पद्धति का प्रयोग किया गया था जो पुष्पक विमान के उड़ान पथ की समस्या का चरणबद्ध प्रयोग कर समाधान करता था। स्वायत नेविगेशन सिस्टम जिसमें विमान मानव के हस्तक्षेप के बिना स्वतंत्र रूप से चलता था।

शूर्पणखा जो रावण की मायावी बहन थी, ने सुंदर स्त्री का भेष धारण कर लक्ष्मण को सम्मोहित करने का प्रयास किया था। यहां शूर्पणखा के द्वारा कृत्रिम बुद्धि से भ्रम की स्थिति पैदा कर दी थी।

मेघनाथ के द्वारा अपनी मायावी शक्ति से सीता का वध दिखाना, यह एक तरह से डीपफैक सिस्टम का उपयोग किया गया था, जो AI का रूप है।

महाभारत में प्रयुक्त अस्त्र–शस्त्रों का वर्णन

सुदर्शन चक्र – भगवान विष्णु का अस्त्र है जो अग्नि के समान चमकता है इसका आकार बहुत तेज और घातक है इसे एक प्रकार का दिव्या डिस्क कहा जा सकता है। महाभारत में यह चक्र श्रीकृष्ण के पास था। सुदर्शन चक्र अपने स्वामी के इशारों पर मन की गति की भांति चलता है। यह चक्र दिव्य ज्ञान और शक्ति का प्रतीक है। महाभारत युद्ध के दौरान श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से सूर्य को ढककर कौरव सेना को पूरी तरह से भ्रमित कर दिया, कि सूर्य अस्त हो गया है। यह श्रीकृष्ण ने अपनी कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से किया था।

ब्रह्मास्त्र और स्वचालित हथियार

ब्रह्मास्त्र – महाभारत के अनुसार ब्रह्मास्त्र का प्रभाव परमाणु बम जैसा था जो भारी मात्रा में गर्मी उत्पन्न करता था। जल स्रोत सूख जाते थे। वातावरण दूषित हो जाता था। यह सबसे घातक व विनाशक अस्त्र था। रेडियो एक्टिव प्रमाण से पता चलता है कि इस अस्त्र का प्रयोग मोहनजोदड़ो शहर को नष्ट करने में हुआ था। यह अस्त्र परशुराम, द्रोणाचार्य, अर्जुन, करण और अश्वत्थामा के पास था। इसका नियंत्रण इसके स्वामी के पास था। आधुनिक समय में इसे AI–आधारित गाइडेड मिसाइलों से जोड़ा जा सकता है, जो लक्ष्यों को पहचानकर स्वचालित रूप से उन पर प्रहार करती हैं।

नागास्त्र – महाभारत में वर्णित एक अत्यंत शक्तिशाली दिव्य अस्त्र था जो विशेष रूप से सर्पों की शक्ति से युक्त था। यह अस्त्र जब छोड़ जाता था, तो सैकडो हजारों विषैले नाग (सर्प) उत्पन्न होकर शत्रु को घेर लेते और उसे मारने का प्रयास करते थे। यह बिजली की गति के समान था। इस अस्त्र का प्रयोग महाभारत युद्ध के दौरान कर्ण ने अर्जुन पर किया था।

वायव्यस्त्र – यह एक दिव्यास्त्र था जो वायु देवता की शक्तियों से संचालित होता था। यह भयंकर आंधी और तूफान उत्पन्न करता था। शत्रु सेना को हवा में उड़ा सकता था। अग्नि अस्त्र के प्रभाव को समाप्त करने में सक्षम था। इस अस्त्र का प्रयोग महाभारत युद्ध में अर्जुन, द्रोणाचार्य व अश्वत्थामा ने किया था। यह एक तरह से हवा में मार करने वाली मिसाइल थी।

अग्नयास्त्र – यह एक दिव्यास्त्र था जो अग्नि देवता की शक्तियों से संचालित होता था। यह अस्त्र अर्जुन के पास में था जो वर्तमान सुपर सोनिक अग्नि मिसाइल की भांति कार्य करता था। अग्नि प्रकट कर शत्रु को नष्ट कर देता था।

वर्षा अस्त्र – यह अस्त्र युद्ध भूमि में भारी वर्षा कर देता था। जिससे शत्रु की गतिविधियां बाधक हो जाती थी। इस अस्त्र का प्रयोग अग्नि अस्त्र को निष्क्रिय करने में किया जाता था। यह एक तरह से एंटीरोधी मिसाइल थी।

तूणीर अस्त्र – यह अस्त्र भगवान श्रीकृष्ण के पास में था, जो तेज और अत्यंत विनाशक था।

नक्षत्र अस्त्र – इस अस्त्र के छोड़ने से लगता था कि आकाश से आग बरस रही है और उल्का पिंडों की वर्षा हो रही है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

यह सभी प्रकार के अस्त्र किसी ने किसी तकनीक से चलते थे, जो आज की वर्तमान मिसाइले है उन मिसाइलो की भांति कार्य करते थे।

पांडवों के द्वारा इंद्र को परास्त कर इंद्रप्रस्थ नगर की स्थापना की गई यह नगर मायासुर के द्वारा बनाया गया पूरी तरह से मायावी था। माया के भ्रम से जमीन पानी लग रही थी, पानी जमीन लग रहा था। इसी भ्रम का शिकार दुर्योधन हुआ। इसे वर्तमान की होलोग्राम टेक्नोलॉजी कहा जा सकता है जो एक कृत्रिम बुद्धि की तरह काम करती है।

पुराणों में कृत्रिम बुद्धि

यंत्रमानव और रोबोटिक संरचनाएँ

विष्णु पुराण और भागवत पुराण में यंत्र–मानवों (यांत्रिक प्राणियों) का उल्लेख मिलता है, जो कार्यों को स्वचालित रूप से करने में सक्षम थे। आधुनिक समय में यह रोबोटिक्स और मशीन लर्निंग के अंतर्गत आने वाली तकनीक से मेल खाता है।

भगवान विष्णु ने अपने भक्त प्रहलाद को बचाने हेतु, नरसिंह अवतार लिया, क्योंकि प्रहलाद के पिता हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा से वरदान लिया था, कि उसे न कोई मनुष्य मार सकता है, न कोई पशु, न दिन में, न रात में, न घर के अन्दर, न बाहर, न भूमि पर, न आकाश में और न किसी शास्त्र से।

भगवान विष्णु ने कृत्रिम बुद्धि से नया रूप धारण कर नरसिंह का रूप धारण किया। आधे मानव (नर) और आधे (सिंह) का रूप धारण किया।

भगवान विष्णु ने हिरण्यकशिपु को संध्या (न दिन न रात) के समय, सभा भवन के द्वार (न अंदर न बाहर) अपनी गोद (न भूमि, न आकाश) पर रखकर अपने नाखून (न अस्त्र, न शस्त्र) से उसका वध किया। जिससे ब्रह्मा जी का वरदान भी असत्य नहीं हुआ।

भगवान विष्णु ने भस्मासुर को समाप्त करने के लिए मोहिनी का रूप धारण किया। विष्णु ने अपने कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर असुरों व राक्षसों को भ्रमित कर अपनी और आकर्षित किया था। मोहिनी रूप में विष्णु ने भस्मासुर को उसके हाथ से भस्म करा दिया।

कृत्रिम बुद्धि के उपयोग –

महाकाव्य और पुराणों में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के कई उदाहरण मिलते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख उपयोग हैं –

1. युद्ध में उपयोग – महाकाव्यों और पुराणों में युद्ध में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के कई उदाहरण मिलते हैं। इनमें यंत्र–रथ और यंत्र–विमान जैसे यंत्रों का उपयोग युद्ध में किया गया था।
2. शिक्षा में उपयोग– पुराणों में शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के उदाहरण मिलते हैं। इनमें विश्वकर्मा द्वारा बनाए गए यंत्रों का उपयोग शिक्षा में किया गया था।
3. चिकित्सा में उपयोग – महाकाव्यों और पुराणों में चिकित्सा में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के उदाहरण मिलते हैं।

निष्कर्ष

महाकाव्यों और पुराणों में वर्णित कई घटनाएँ और वस्तुएँ आधुनिक कृत्रिम बुद्धि और स्वचालित प्रणालियों से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय मनीषियों ने विज्ञान और तकनीकी अवधारणाओं को अपने ग्रंथों में किसी न किसी रूप में स्थान दिया था। यदि हम इन प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन करें, तो आधुनिक तकनीकी विकास के लिए कई नई प्रेरणाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. वाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड, सर्ग 59, 91, 108 श्लोक 142, 16, 17
2. वाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड, सर्ग 47, श्लोक 2
3. वाल्मीकि रामायण, अरण्य कांड, सर्ग 30, श्लोक 27
4. वाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड, सर्ग 92, श्लोक 2, 5
5. वाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड, सर्ग 121, श्लोक 10
6. महाभारत, सभा पर्व, अध्याय 44, 45
7. महाभारत, कर्ण पर्व, अध्याय 90 – 95
8. महाभारत, द्रोण पर्व, अध्याय 59, 60
9. महाभारत, उद्योग पर्व, अध्याय 48, 49
10. महाभारत, सभा पर्व, अध्याय 50 – 52
11. भागवत पुराण, सप्तम स्कंध 7.8.17 – 7.8.22
12. श्री मदभागवत पुराण, अष्टम स्कंध